[illegible]

जनसत्ता 3 मई, 2014 : “पिछले वर्ष जेल में साथ-साथ बिताए तीन महीनों ने हमें और नजदीक ला दिया था। ... पूरे जेल प्रवास में हमने साथ-साथ एक ही बरतन में खाना खाया। बरतन के नाम पर हमें एक-एक थाली मिली थी, अतएव हम संयुक्त रूप से एक थाली में दोनों की दाल लेते और एक थाली में दोनों की सब्जी और फिर मिल कर खाते। दाढ़ी, चश्मा, वेशभूषा, टायर की एक-सी चप्पलें, दुबला-पतला शरीर आदि ने हम दोनों में काफी साम्यता पैदा कर दी थी। लोग अक्सर मुझे राजनारायण समझते और राजनारायण को सुनील समझते।”

ये बातें अभी हाल में 21 अप्रैल को मस्तिष्क आघात के चलते एम्स, दिल्ली में महज चौवन साल की उम्र में दिवंगत हुए सुनील भाई ने लगभग चौबीस साल पहले अपने हमसफर राजनारायण की आकस्मिक सड़क दुर्घटना के बाद उनकी याद में जारी की गई ‘लड़त जारी’ नामक स्मारिका में दर्ज की थीं। राजनारायण मूर्धन्य समाजवादी चिंतक किशन पटनायक की प्रेरणा से 1980 में गठित समता संगठन के जिला होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) के केसला ब्लॉक के आदिवासियों के बीच रहते हुए उनको आंदोलित करने वाले एक मौलिक संघर्षशील कार्यकर्ता थे।

वे दस साल तक इसी समाजवादी धर्म का पालन करते हुए अपने निधन तक उस क्षेत्र की शोषित जनता के लिए एक किंवदंती बन चुके थे। उसी आलेख में सुनील ने आगे लिखा, “राजनारायण के निधन से देश के लिए एक आदर्शवादी क्रांतिकारी चला गया, समता संगठन के लिए एक उत्साही, समर्पित नौजवान कार्यकर्ता चला गया, किसान आदिवासी संगठन के लिए अनन्य जुझारू नेता चला गया, होशंगाबाद-बैतूल जिलों के आदिवासी अंचल के लिए एक सच्चा जन हितैषी चला गया, लेकिन मेरे लिए एक दुर्लभ साथी और सहारा चला गया...।”

आज सुनील के इस तरह असमय चले जाने के बाद देश भर के सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनकामी लोगों की ओर से उनके बारे में हूबहू वही भावनाएं अभिव्यक्त की जा रही हैं, जो चौबीस साल पहले खुद सुनील ने अपने साथी राजनारायण के जाने पर व्यक्त की थीं। फर्क केवल यह है कि 1980 का समता संगठन 1995 तक समाजवादी जन परिषद नामक एक राजनीतिक पार्टी में बदल चुका था, सुनील अपने निधन के वक्त जिसके राष्ट्रीय महामंत्री थे।

गौरतलब है कि जब राजनारायण ने 1980 में केसला क्षेत्र में काम शुरू किया था उस वक्त सुनील जेएनयू में अर्थशास्त्र में एमए के विद्यार्थी थे और उन्हीं की तरह समता संगठन और समता युवजन सभा में सक्रिय थे। वे राजनारायण के काम से बेहद प्रेरित थे और अक्सर दिल्ली से केसला आकर काम करते रहते थे। लेकिन 1985 में जब राजनारायण के नेतृत्व में पानी के लिए चल रहे आंदोलन के दौरान लोगों ने मटके फोड़े तो इसकी खबर मिलने पर सुनील को समझ आ गया कि उनका दिल्ली छोड़ने का समय आ गया है। एमए के बाद वे जेएनयू में ही अर्थशास्त्र में एमफिल के शोधछात्र बन चुके थे।

सुनील ने अपने दिल की बात सुनी और मई 1985 में अर्थशास्त्र का अपना मेधावी कैरिअर छोड़ कर केसला में हमेशा के लिए बस गए। राजनारायण के निधन के बाद सुनील ने उस संघर्षशील और समाजवादी बौद्धिक विरासत को अगले चौबीस साल तक न केवल निभाया, उसे बहुआयामी स्तरों पर समृद्ध किया, कई मायनों में पुनर्परिभाषित भी किया।

सुनील ने जे□ नयू के वद्यिार्थी जीवन के दौरान ही अपने मौलकि सोच का परचिय देना शुरू कर दयिा था□ समता संगठन की ओर से असम के छात्र आंदोलन के समर्थन में 1983 की दल्लिी से गुवाहाटी तक की साइकलि यात्रा और इंदरिा गांधी की हत्या के बाद देश भर में फैले सखि-वरिोधी उन्माद के खलिाफ 1984 में दल्लिी से अमृतसर तक कयिा गया शांतमिार्च युवा सुनील की उभरती हुई नेतृत्व क्षमता और रचनात्मक राजनीतकि शुरुआती सबूत हैं□ उसी दौर में सुनील ने 1984 के सखि-वरिोधी उन्माद पर 'यह बर्बरता कहां छपिी थी?' नामक पुस्तकि जारी की□ इस पुस्तकि में सुनील की उस वलिक्षण क्षमता की झलक देखता हूं, जसिका मैं हमेशा प्रशंसक रहा हूं□

मुल्क के ज्वलंत सामाजकि-राजनीतकि मुद्दों पर सुनील फटाफट पुस्तकि□ं जारी कर देते थे□ यह आलेख लखिते वक्त मेरे सामने उनके द्वारा वभिन्नि दौरों में जारी की गई □क दर्जन पुस्तकि□ं रखी हुई हैं- खेती पर उदारीकरण का हमला, कसिानों की आत्महत्या, मध्यप्रदेश की संपदा लूटने के लि□ वदिेशी कंपनियों की □ग्री-बजिनेस मीट, गेहूं आयात और खाद्य सुरक्षा, भ्रष्टाचार और नवउदारवाद, जन-वरिोधी परविहन नीत,ि राष्ट्रमंडल खेलों का तमाशा, समान शक्षिा व्यवस्था और बाजारीकरण, आदि वषियों पर सीधी-सादी भाषा में पैना वश्लिेषण करती पुस्तकि□ं□ हरेक में प्रस्तुत उस मुद्दे से जु□। इतहिास, तथ्य, आंकि□, तालकि□ं और उनके स्रोत दखिाते हैं कि भले सुनील जे□ नयू का अपना शोध कैरअिर छो□ कर केसला में बस ग□, लेकनि वे उस ज्ञान का भरपूर उपयोग जन-चेतना नरि्माण के लि□ जीवन पर्यंत करते रहे□

छत्तीसग□ के क्रांतकिरी मजदूर नेता शहीद शंकर गुहा नयिोगी ने भारत की राजनीतकि के 'संघर्ष और नरि्माण' का परविर्तनकामी दर्शन दयिा था□ सुनील ने भी उसी तर्ज पर नर्मदा की सहायक नदी तवा पर 1975 में बने बांध से वस्थिापति आदवािसयों के उनके छीने ग□ जल-जंगल-जमीन के हकों की ल□ाई के लि□ नब्बे के दशक के शुरुआती वर्षों में कसिान आदवािसी संगठन के झंडे के तहत लामबंद कयिा□ इस ल□ाई के चलते कांग्रेस की राज्य सरकार को बाध्य करके संगठन ने 1996 में आदवािसयों के लि□ तवा बांध से बने वशिाल जलाशय में मछली पक□ने-पालने और उसके तट पर पानी उतरने से नकिली जमीन पर खेती करने के अधकिार प्राप्त कि□□

इसके लि□ जलाशय के आसपास बसे आदवािसयों की सैतीस प्राथमकि सहकारी समतियों का गठन करके तवा मत्स्य संघ का नरि्माण हुआ□ तवा मत्स्य संघ और राज्य सरकार की ओर से मध्यप्रदेश मत्स्य महासंघ के बीच मछली पालन, पक□ने और खेती करने के अधकिारों को लेकर पांच-साला अनुबंध हुआ□ आगामी पांच सालों में तवा मत्स्य संघ ने सामुदायकि नयिंत्रण में प्राकृत्तकि संसाधनों के प्रबंधन की □क प्रेरणादायक मसिाल पेश की□ आदवािसयों ने जलाशय से मछली का उत्पादन ब□ाया, जसिकी बक्रिी हाव□। तक के बाजारों में होने लगी□ इससे वस्थिापति आदवािसयों को □क सुनश्चिति आमदनी होने लगी□ मछली व्यापारियों, ठेकेदारों और बचिौलियों का धंधा ठप हो गया□ शायद इसी कारण राज्य सरकार को वकिास का यह जनपक्षीय वैकल्पकि मॉडल मंजूर नहीं था□ राज्य सरकार द्वारा 2001 में पांच-साला अनुबंध की समाप्त पिर लीज नवीकरण से इनकार करने पर कसिान आदवािसी संगठन ने □क साहसकि संघर्ष कयिा□ अंतत: अगले पांच साल के लि□ लीज का नवीकरण हो पाया□

उक्त अनुबंध की 2006 में समाप्त तिक भाजपा की राज्य सरकार बन चुकी थी, जसिने सतपु□। टाइगर रजिर्व का बहाना बना कर दूसरा लीज नवीकरण करने से सरि से इनकार कर दयिा और आदवािसयों को उनके लंबे संघर्ष से मलि संवैधानकि हक से वंचति कर दयिा□ इस दौर में सुनील के नेतृत्व में वैकल्पकि वकिास की जो बहस राजनीतकि स्तर पर छे□ी गई वह आज भी देश के शासक वर्ग से जवाब मांग रही है□ वर्तमान चुनावी दौर में जसि हल्के और सतही ढंग से गुजरात वाले वकिास के मॉडल बनाम बहिार और तमलिनाडु के वकिास के मॉडल या फरि दल्लिी में हाल में प्रस्तावति मोहल्ला समतियों पर जुमलेबाजी हो रही है, उसके चलते केसला के आदवािसयों ने कसिका वकिास, कैसा वकिास और कसिके द्वारा कसिके हति में वकिास के जो बुनयिादी सवाल ख□ कि□ थे उनसे पलायन करने वाले पूंजीपति वर्ग की राजनीतकि भी भी देश का भला नहीं कर सकती, चाहे उसका प्रतनिधित्वि स्थापति पार्टयिां कर रही हों या कोई नई पार्टी□ शायद इसी वश्विास के कारण सुनील अपनी समाजवादी जन परषिद की समाजवादी राजनीत में अंगद की तरह पैर गा□ कर अंत तक टकि रहे, जबकि उनके कई बरसों पुराने वरषि्ठ साथी वगित कुछ महीनों में पूंजीवाद के नवउदारवादी खाके में ही नवोदति आम आदमी पार्टी में शामलि हो चुके थे□

पांच साल पहले सुनील 'केजी से पीजी' तक भेदभाव से मुक्त समतामूलक पूर्णत: मुफ्त शिक्षा व्यवस्था के निर्माण के लिए गठित 'अखिल भारत शिक्षा अधिकार मंच' के संस्थापक सदस्य बने।

शुरू से उन्होंने इस संगठन के आठ-सदस्यी अध्यक्ष मंडल के सक्रिय सदस्य के रूप में शिक्षा आंदोलन की विचारधारा, कार्यनीति और संघर्ष के मुद्दे तय करवाने में अहम भूमिका निभाई। पिछले साल तक वे इस आंदोलन की पत्रिका 'तालीम की लड़ाई' के संपादक भी रहे, लेकिन 'सामयिक वार्ता' के संपादन की नई जिम्मेदारी उनके कंधों पर आने से 'तालीम की लड़ाई' की जिम्मेदारी किसी संपादक मंडल को सौंप कर अलग हुए।

तवा मत्स्य संघ का 2006 में काम समिट जाने के अनुभव से सबक लेते हुए सुनील ने अपनी ऊर्जा 'वैकल्पिक विकास के लिए वैकल्पिक राजनीति' के सवाल पर केंद्रित कर दी। इस विषय पर आयोजित एक संवाद (इंदौर, 2008) के दौरान सुनील द्वारा रखे गए विचार मौजूं होंगे। उन्होंने कहा, "जब तक आधुनिक विकास नीति से लेकर, आधुनिक शासन व्यवस्था एवं पूंजीवाद तक इसका विश्लेषण करके इनके विकल्प के निर्माण... वैचारिक तैयारी नहीं होगी तब तक कोई भी आंदोलन बहुत ज्यादा आगे नहीं बढ़ सकता। तो बात घूम-फिर कर वैकल्पिक राजनीति पर आ जाती है। ...

आप इस दुनिया को बदलने के प्रति कोई तीव्रता महसूस कर पा रहे हैं या नहीं?... आप कोई विकल्प देख पा रहे हैं या नहीं? या आपने सोच लिया है कि अब तो पूंजीवाद का कोई विकल्प नहीं है या अब ग्लोबलाइजेशन का कोई विकल्प नहीं है। ... यदि आपने यह मान लिया है तो आप न तो वैकल्पिक राजनीति का निर्माण कर सकते हैं और न ही राजनीतिक विकल्प का।"

वे यहां नहीं रुकते, बल्कि देश पर हावी बूर्जुआ राजनीति के सामने अपनी निर्णायक बात रखते हैं: "यह जो वैचारिक शून्य आया है यह बहुत खतरनाक है। बहुत-से लोग यह भी मानते हैं कि... विचारधारा की कोई जरूरत नहीं है... यह सोच दिशाहीनता की ओर ले जाता है। ... दुनिया को समझने और समझ कर दुनिया को बदलने का एक ढांचा तो बनाना ही पड़ेगा, उसी को आप विचारधारा कह सकते हैं। वह समाजवादी विचारधारा हो, सर्वोदयी विचारधारा हो, मार्क्सवादी विचारधारा हो या कोई और विचारधारा हो।"

अंतत: सुनील हम सबको ललकारते हैं, "सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या दुनिया को बदल कर एक नया समतामूलक, न्यायमूलक समाज बनाना संभव है? यदि आप ऐसा मानते हैं तो एक वैकल्पिक राजनीति निकलेगी और यदि हमने मान लिया कि यह संभव नहीं है तो कोई वैकल्पिक राजनीति नहीं निकलेगी। ... कांग्रेस की जगह भाजपा आती रहेगी, भाजपा की जगह कांग्रेस आती रहेगी या कोई तीसरी भी आएगी तो वह उन्हीं का नया संस्करण होगी। ... तो एक नए समाजवाद की कल्पना करें, जिसमें हम पूंजीवादी व्यवस्था का विकल्प ढूंढ़ने के साथ-साथ विकास के नए मॉडल और एक नई सभ्यता की कल्पना करें। ... सिर्फ राजनीतिक विकल्प का नहीं, वैकल्पिक राजनीति का जो मामला है वह अनिवार्य रूप से नए समाजवाद की कल्पना और उसके विचार से जुड़ा है।"

निस्संदेह, नए समाजवाद का यह सपना वैकल्पिक राजनीति की अगली चुनौती रहेगा। अलविदा सुनील भाई!

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta